DIESEL LOCOMOTIVES IMPORTED FROM WEST GERMANY

*861. SHRI R. S. VIDYARTHI: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a large number of Broad Gauge WDS3 and N. G. ZDM3 diesel locomotives imported from West Germany have remained out of order from the time they were received in India and if so, the reasons therefor and how their ineffectiveness compares with the normal target for diesel lcomotives;

(b) whether it is a fact that the Railway Board are contemplating a series of comparative tests on WDS3 locomotives with the existing hydraulic transmission and an imported German Transmission in view of serious doubts about the efficiency of the existing Suri Transmission as a result of tests conducted by RDSOO.

(c) whether it is also a fact that despite poor results with the earlier lcomotives, the Railway Board have again placed an order for 82600 H.P. lcomotives on another German firm but with the same type of Transmission and Engine whose efficiency on a locomotive has yet to be established by the manufacturers in their own country; and

(d) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C. M. POONACHA): (a) *WDS3 Locomotives*:—No, Sir. These locomotives have been working satisfactorily except for some period when they were withdrawn from service due to failures of crank shafts. The locos have been working satisfactorily after the crank shafts were replaced and their average in effectiveness from January-October, 1967 has been 14·1% which is within the prescribed percentage of 15%.

ZDM3:—No ZDM3 locomotives have been imported by the Indian Railways.

(b) No, Sir. Suri Transmission has proved to be quite satisfactory and there are no doubts about its efficiency. The Board, are, however, arranging for comparative trials with similar locos fitted with Suri Transmission and Voith Hydraulic transmission to assess the comparative economy of these transmissions.

(c) No, Sir. As stated above the results with the earlier locos fitted with Suri Transmission have been generally satisfactory. Therefore, with a view to develop the application of Suri Transmission on locomotives of higher horse power range, an order for 8 Broad Gauge Main Line diesel locos of 2500 H.P. has been placed on M/s. Rheinstahl Henschel, West Germany.

(d) Does not arise.

SETTING UP OF SPINNING MILLS IN CO-OPERATIVE SECTOR

*862. SHRI CHANDRA SHEKHAR SINGH: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the programme for the setting up of spinning mills in the Cooperative Sector has been seriously dislocated because of the non-avilability of block funds for the last two years; and

(b) if so, the steps taken to provide necessary finance to the Cooperative sector for the setting up of spinning mills?

THE MINISTER OF COMMERCE (SHRI DINESH SINGH): (a) and (b). The Hon'ble Member's attention is invited to the reply given by the Deputy Prime Minister to Unstarred Question No. 4335 by Shri Shiva Chandra Jha on the 14th December, 1967, in which the position was explained fully.

चैकोस्लोवाकिया के साथ व्यापार

*863. **श्री ओंकार लाल बेरवा** : क्या **वाणिज्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि भारत ने चैकोस्लोवाकिया के साथ कोई व्यापार करार किया है; और

(ख) यदि हां, तो इस करार की मुख्य बातें क्या हैं तथा इस करार के अन्तर्गत किन-किन वस्तुओं का आयात तथा निर्यात किया जायेगा ?

वाणिज्य मंत्री (श्री दिनेश सिंह) : (क) और (ख). 7 नवम्बर, 1963 को भारत तथा चैकोस्लोवाकिया के बीच हुआ व्यापार करार

1968 के अन्त तक वैध है। 1968 में दोनों देशों के बीच जिन वस्तुओं का विनिमय किया जाना है उनकी रूपरेखा मोटे तौर पर 28 नवम्बर 1967 को तय कर ली गयी थी। चैकोस्लोवाकिया का भारत से मुख्यत: इन वस्तुओं का निर्यात किया जायेगा; परम्परागत वस्तुओं, जैसे चाय, काफी, तम्बाकू, तेल रहित खली, लौह अयस्क, मैंगनीज अयस्क, पटसन के माल आदि के अतिरिक्त इंजीनियरी की विविध वस्तुएं जैसे एम० एस० पाइप तथा पाइप जुड़नार, हीरे के औजार, काटने के औजार, दस्ती तथा छोटे औजार, मोटर गाड़ियों का सहायक सामान, ताले तथा वियोज्य ताले, रेल-डिब्बों का सहायक सामान, तार के रस्से औद्योगिक संयंत्र तथा मशीनें, संचायक बैटरियां, स्विचगियर, रेफ्रीजरेटर, फ्लैश लाइट, रंग-रोगन, लिनोलियम, टायर तथा ट्यूब सिले-सिलाये कपड़े, खेल-कूद का सामान, सिगरेट, इल्मेनाइट तथा लौह-मैंगनीज आदि: 1968 में चैकोस्लोवाकिया से भारत में आयात की जाने वाली मुख्य वस्तुएं ये हैं: मशीनी औजार, पूंजीगत माल, लोहे तथा इस्पात के उत्पाद, चैकोस्लोवाकिया से सहायता प्राप्त विभिन्न प्रायोजनाओं के लिये रसायन तथा संघटक एवं कच्चा माल, प्रयोगशाला में काम आने वाले तथा वैज्ञानिक उपकरण, ट्रैक्टर आदि।

BOOKS IMPORTED FROM U.K.

*863-A. **SHRI S. S. KOTHARI:** Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the rupee value of books imported from the U.K. is less owing to sterling devaluation but booksellers are still selling books at the old exchange rate; and

(b) if so, the action Government propose to take in this regard?

THE MINISTER OF COMMERCE (SHRI DINESH SINGH): (a) The Federation of Booksellers and Publishers Associations in India, Bombay has been advised to see that the importers do not sell the books imported after the devaluation of the Pound Sterling at the old exchange rate. They have given an assurance regarding this.

(b) Importers, who are found to contravene this condition, will be dealt with in accordance with the Import Trade Control Regulations.

खेतरी तांबा परियोजना

*864. **श्री ओंकार लाल बोहरा :** क्या **इस्पात, खान तथा धातु** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) राजस्थान में खेतरी के निकट स्थापित किये जा रहे तांबा संयंत्र का कार्य कब तक पूरा होने की सम्भावना है;

(ख) इस संयंत्र के पूरा हो जाने पर कितनी विदेशी मुद्रा की बचत होने की सम्भावना है; और

(ग) इस बड़ी परियोजना को पूरी करने में विलम्ब होने के क्या कारण हैं?

इस्पात, खान तथा धातु मंत्री (डा० चन्ना रेड्डी): (क) आशा है कि अब 1970 तक खेनरी तांबा परियोजना चालू हो जायगी।

(ख) आयातित तांबे की 7500 रुपये प्रति टन अवतारित मूल्य को मानते हुए (जब कि मैटल एक्सचेंज में तांबे का वर्तमान मूल्य 590 पौंड प्रति टन है), जब यह परियोजना पूरा उत्पादन शुरु कर देगी तो इस से लगभग 23 करोड़ रुपये प्रति वर्ष के स्तर की विदेशी मुद्रा की बचत होगी।

(ग) इस परियोजना को चालू करने में देरी परियोजना को पूरी करने के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा का ऋण प्राप्त न होने के कारण हुई। देरी का दूसरा सहायक कारण यह था कि इस योजना को पूरा करने के निर्णय के बाद इसकी परिधि बढ़ाने के बारे में दोबारा सोचा गया। परियोजना की आर्थिक व्यवस्था को सुधारने के विचार से उप-पदार्थों के प्रयोग और प्राप्ति के लिये विशेष अनुबन्ध बना कर परियोजना की परिधि का विस्तार किया गया। इस के साथ साथ उपकरण की प्राप्ति